





खमीर के दो प्रकार

मती 13:33

मरकुस 8:15

लूका 12:1;13:20-21

यीशु के दृष्टांत

मती 13 या लूका 13 से पाठ पढ़ाएँ; ये आयतें लगभग एक जैसी हैं। यह यीशु का एक बहुत छोटा दृष्टांत है, और हम इसकी तुलना यीशु द्वारा फरीसियों के खमीर या यीस्ट के बारे में की गई टिप्पणियों से कर सकते हैं।

यहूदी लोगों को एक मसीहा की उम्मीद थी, लेकिन यीशु उन उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे।

धर्मग्रंथों में भविष्यवाणी की गई थी कि यहूदियों को बचाने के लिए एक मसीहा आएगा जो अपने लोगों पर राजा के रूप में शासन करेगा। यहूदी एक उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन वह यीशु से बिल्कुल अलग था। वे एक शक्तिशाली, सैन्य नेता की उम्मीद कर रहे थे, जो तत्कालीन रोमन सरकार के विरुद्ध विद्रोह करेगा और इजराइल को विश्व महाशक्ति के रूप में स्थापित करेगा। शिष्यों की बातों से भी हमें पता चलता है कि वे उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब यीशु उन्हें बताएगा कि अब विद्रोह करने और सत्ता संभालने का समय आ गया है।

यीशु एक नबी के रूप में आते हैं, जो सत्ता की लालसा नहीं रखते बल्कि स्वयं को विनम्र बनाकर बीमारों, गरीबों और समाज से बहिष्कृत लोगों की सेवा करते हैं। वे उन लोगों तक पहुंचते हैं जिन्हें हर कोई ठुकरा देता है और जरूरतमंदों को चंगा करते हैं; वे पापियों के साथ भोजन करते हैं।

वह जनता की एक नेता से अपेक्षाओं के बिल्कुल विपरीत काम करता है।

यीशु लगातार लोगों को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उनका राज्य अलग है। यीशु उन्हें बताते हैं कि परमेश्वर का राज्य, या स्वर्ग का राज्य, पृथ्वी पर उसी प्रकार आ रहा है जैसे स्वर्ग में है। वे उन्हें दृष्टांतों के माध्यम से यह समझाते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का आगमन है। परमेश्वर के राज्य में दूसरों को स्वयं से ऊपर रखना और दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से ऊपर रखना शामिल है। स्वर्ग का राज्य है दूसरों के साथ दयालुता से पेश आना और जिन्हें कोई प्यार नहीं करता, उनसे भी प्यार करना। दुनिया जिन्हें सबसे कमतर समझकर तिरस्कृत करती है, वे वास्तव में ईश्वर के राज्य में सबसे महत्वपूर्ण हैं।

स्वर्ग का राज्य उन सभी चीजों के विपरीत है जिनकी दुनिया उम्मीद करती है।

यह कहानी भी अलग नहीं है, वह स्वर्ग के राज्य की स्थिति को दर्शाने के लिए कई तुलनाएँ कर रहा है।

मती 13 में, यीशु समुद्र किनारे बैठे हुए स्वर्ग के राज्य को समझाने के लिए अनेक दृष्टांत सुना रहे थे। उन्होंने रोटी बनाने वाली एक स्त्री का एक छोटा सा दृष्टांत दिया। उन्होंने बताया कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने तीन माप आटे में मिलाया, जब तक कि सारा आटा खमीर न हो गया, या जब तक कि खमीर या यीस्ट पूरे आटे में अच्छी तरह से मिल न गया।

खमीर क्या होता है? यह यीस्ट होता है।

खमीर एक सजीव जीव है; यह एक जीवित कोशिका है। इसी से हमारी रोटी फूलती है। खमीर के बिना हमें कई तरह की चपटी रोटियाँ मिलती हैं, लेकिन खमीर ही रोटी को फुलाता है। जब आटे में खमीर मिलाया जाता है, तो यह आटे की पूरी संरचना को बदल देता है, न कि केवल उसके एक हिस्से को (गलातियों 5:9)।

चर्चा करना:

क्या आपने कभी रोटी बनाई है? क्या आपने कभी आटे में खमीर मिलाया है?

क्या आधी रोटी भी फूल सकती है? खमीर मिलाने के बाद पूरी रोटी फूल जाएगी।

एक बार खमीर डालने के बाद उसे निकालना भी संभव नहीं है। अगर आप नहीं चाहते कि ब्रेड फूले या उसमें खमीर उठ जाए, तो आपको शुरू से सब कुछ दोबारा करना पड़ेगा।

तो यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं?

स्वर्ग के राज्य का खमीर लोगों के दिलों को बदल देता है और दुनिया को बदल देता है।

यह आटे के लोई में छिपा हुआ है। आप इसे देख नहीं सकते, लेकिन यह बदलता रहता है। *सब कुछ।*





खमीर के दो प्रकार

एक बार स्वर्ग का राज्य संसार में आ गया, तो उसे रोकना असंभव है। (प्रेरितों 5:38-39)

यह बिल्कुल अलग है, यह कुछ नया है।

बाइबल में कई बार खमीर का जिक्र बुराई के प्रतीक के रूप में किया गया है; कई बार खमीर को पाप के प्रतीक के रूप में भी इस्तेमाल किया गया है। पुराने नियम के कई पर्वों और त्योहारों में इस्राएल के लोगों, यानी यहूदियों से, अपने घरों से खमीर हटाने और खमीर या खमीर से बनी कोई भी बलि न चढ़ाने का आह्वान किया गया था।

लेकिन जब हम यीशु द्वारा बताई गई इस राज्य की कहानी को पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि बाइबिल में खमीर या यीस्ट को देखने के दो अलग-अलग तरीके हैं।

यीशु ने शिष्यों को फरीसियों के खमीर से सावधान रहने के लिए कहा। और सद्कियों।

सद्कियों हैं एक अन्य धार्मिक समूह: मत्ती 16:1 यीशु ने उन्हें सावधान रहने के लिए भी कहा। हेरोदेस का खमीर (मरकुस 8:15)। उनका खमीर उनका सिद्धांत है (मत्ती 16:12), जो पाखंड है (लूका 12:1)।

फरीसियों ने सब कुछ “सही” किया। उनके कार्य दूसरों को बाहर से अच्छे लगते थे, लेकिन अंदर से उनके दिल शुद्ध नहीं थे (मत्ती 23:25,27)।

उनके कुछ और ही मकसद थे; वे सभी लोगों द्वारा देखे और सराहे जाने चाहते थे।

उनका हृदय ईश्वर के प्रति निष्ठावान नहीं था और उनके कर्म उनके इरादों के अनुरूप नहीं थे।

यीशु ने फरीसियों को फटकारा - यहाँ तक कि उनके विचारों पर भी सवाल उठाए। कई बार हमें बताया गया है कि वह उनके विचारों को जानते थे, और उनकी टिप्पणियाँ उनके मन में चल रहे विचारों को ही संबोधित करती थीं (मत्ती 9:4; मरकुस 2:8; लूका 5:22)। यीशु ने फरीसियों को “पाखंडी” कहा, जिसका अर्थ था कि वे केवल दिखावा कर रहे थे। वे अपने आस-पास के लोगों को खुश करने के लिए एक तरह का व्यवहार करते थे, और सही बातें कहते थे, लेकिन उनके हृदय यीशु से “बहुत दूर” थे (मत्ती 15:18; मरकुस 7:6; यशायाह 29:13)। यीशु ने लोगों से कहा कि वे फरीसियों की तरह न बनें, जो लोगों को दिखाने के लिए खुलेआम ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करते थे (मत्ती 6:5-6)।

फरीसियों ने बहुत से अतिरिक्त नियम बनाए और उनका पालन किया ताकि हर कोई उन्हें अतिरिक्त पवित्र समझे। वे सबको इन नियमों का पालन करने के लिए कहते थे, लेकिन स्वयं नियमों का पालन न करने के लिए बहाने ढूँढते थे, जैसा कि परमेश्वर चाहता था। इसका एक उदाहरण यह है कि उन्होंने सब्त के दिन चंगाई करने के लिए यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया। फरीसी बहुत ही अहंकारी और धर्मी थे। यीशु अपने शिष्यों से कह रहे थे कि जो मार्ग मनुष्य को उचित लगता है (नीतिवचन 14:12, 16:25) वह मृत्यु का मार्ग है और उन्हें इससे सावधान रहना चाहिए।

अहंकार या आत्म-धार्मिकता का यह पाप भी एक खमीर की तरह है जो हृदय में पनपता है और व्यक्ति को बदल देता है, और यही वह खमीर है जिसके खिलाफ उन्होंने चेतावनी दी थी।

फिर से, वह हर बात को लोगों की सोच के बिल्कुल उलट मोड़ देता है। जो चीज़ पहले किसी बुराई का प्रतीक मानी जाती थी, अब उसी का इस्तेमाल दुनिया में साम्राज्य के प्रसार के तरीके को दर्शाने के लिए किया जा सकता है। और एक बार जब यह दुनिया में फैल जाता है, तो इसे हटाया नहीं जा सकता।



कहानी में यीशु



दृष्टांतों के माध्यम से यीशु उन लोगों से बहुत साहसिक बातें कह सके जो खुले विचारों वाले थे, जो "सुनने के लिए कान रखते थे।"

यीशु दृष्टांतों के माध्यम से कहानियाँ सुनाते थे ताकि लोग विचार करें, न कि अपने संदेश को स्पष्ट रूप से समझाएँ। जो लोग परमेश्वर के राज्य की खोज में थे, वे अध्ययन और मनन करते और गहराई से समझते। लेकिन इन दृष्टांतों ने यीशु को अपने विरोधियों से अपना सच्चा संदेश छिपाने का अवसर भी दिया।

उसने रहस्यमय भाषा में बात की ताकि उसे राज्य को पूरी तरह से दुनिया में लाने के लिए आवश्यक समय मिल सके।

ये दृष्टांत आज भी उन सच्चाइयों से भरे हुए हैं जिन्हें हम पवित्र आत्मा से अपनी समझ के माध्यम से प्रकट करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

29. चट्टान पर

1. इस कहानी में कितने प्रकार के लोग हैं?
2. किस प्रकार का व्यक्ति यीशु की बातों का पालन करता है?
3. ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो यीशु की बात नहीं मानता?
4. उस मूर्ख व्यक्ति ने अपना घर किस आधार पर बनाया था?
5. किसका घर नींव हीन था?

भजन संहिता 62:6-7

वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है। वही मेरा रक्षक है; मैं विचलित नहीं होऊंगा। परमेश्वर में ही मेरा उद्धार और मेरी महिमा है; परमेश्वर ही मेरी शक्ति और शरण का स्रोत है।

30. गेहूं में खरपतवार

1. नौकरों को कैसे पता चल सकता था कि खेत में कुछ और भी बोया गया है?
2. वे पहले क्यों नहीं बता सके?
3. एकमात्र अंतर क्या था?
4. जब उन्हें पहली बार में ही पता चल गया था कि खरपतवार क्या हैं, तो उन्होंने उन्हें क्यों नहीं उखाड़ा?
5. खरपतवार किसका प्रतिनिधित्व करते हैं?

मत्ती 7:15-16

झूठे नबियों से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे भेड़िये होते हैं। तुम उन्हें उनके कर्मों से पहचानोगे। क्या मनुष्य कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कंटीली झाड़ियों से अंजीर तोड़ते हैं?

31. खमीर के दो प्रकार

1. कहानी में वर्णित महिला ने आटे की कितनी मात्रा का उपयोग किया?
2. क्या आटे से खमीर निकालना संभव है?
3. इसके बजाय आपको क्या करना होगा?
4. अपने शब्दों में बताइए, “फरीसियों का खमीर” क्या है? (लूका 12:1)

प्रेरितों 5:38-39

इसलिए इनके विषय में मेरी सलाह यह है कि आप इन्हें छोड़ दें और इनसे दूर ही रहें क्योंकि यदि इनके कार्य की उपज और योजना मनुष्य की ओर से है तो यह अपने आप ही विफल हो जाएगी; मगर यदि यह सब परमेश्वर की ओर से है तो आप उन्हें नाश नहीं कर पाएँगे—ऐसा न हो कि इस सिलसिले में आप स्वयं को परमेश्वर का ही विरोध करता हुआ पाएँ।”

32. मनुष्य का हृदय

नीतिवचन 4:20-23 पढ़ें

1. हमें किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?
2. हमें किस बात पर ध्यान देना चाहिए?
3. हमें परमेश्वर के वचन को कहाँ रखना चाहिए?
4. हमारे शरीरों के लिए परमेश्वर का वचन क्या है?

नीतिवचन 4:23

सबसे बड़ी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह। क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

